International Journal of Arts & Education Research

स्वामी विवेकानंद

स्त्री-शिक्षा द्वारा समाज की उन्नति

डॉ0 इंदु सिंह[1], मीनाक्षी त्यागी*[2]

[1]शोध निर्देशिका, पंचवटी इंस्टीट्यूट ऑफएजूकेशन एण्ड टेक्नोलॉजी परतापुर, मेरठ।

[2]शोधर्थी, श्री वेंकटेश्वरा यूनिवर्सिटी, गजरौला।

स्वामी विवेकानंद भारतीय दर्शन के संदर्भ में विस्तार, प्रगति, उन्नति, शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से भविष्य के चतुर्मुखी विकास के प्रणेता थे। उनका हृदय गहन विचारों, प्रमाणों तथा असीम क्षमताओं व तथ्यों से भरा था। वे वेदांत के विख्यात और प्रभावशाली आध्यात्मिक गुरु माने जाते हैं। वे स्वतंत्राता, जो नैतिकता से परिपूर्ण हों, के पक्षधर थे। उनका मानना था कि मनुष्य में जो सर्वोपरि है उस विश्वबंधुत्व की भावना का विकास संपूर्ण मानवता के उत्थान से ही संभव है। भारत का आध्यात्मिकता से परिपूर्ण वेदांत दर्शन विश्व में स्वामी विवेकानंद के दर्शन द्वारा ही पहुँचा है। उन्हें बालकपन से ही ईश्वर व उसे प्राप्त करने की इच्छा थी। अपने परिवार के धर्मिक संस्कारों का उन पर गहरा प्रभाव था। स्त्री-शिक्षा के संदर्भ में स्वामी जी ने कहा है कि-

तोड़ो जंजीरें जिनसे जकड़े हैं पर तुम्हारे,

वे सोने की हैं तो क्या कसने में तुमको हारे।

स्वामी विवेकानंद केवल उन्तालीस वर्ष के संक्षिप्त जीवनकाल में ऐसा काम कर गए जो उन्हें अनेक शताब्दियों तक पीढ़ियों का मार्गदर्शक बनाकर रखेगा। वे बड़े स्वप्न-दृष्टा थे। वे एक ऐसे समाज की कल्पना करते थे जिसमें धर्म या जाति व लिंग के आधर पर मनुष्य-मनुष्य में कोई भेद न रहे। उनका महत्वपूर्ण कथन था-

उठो, जागो और तब तक नहीं रुको,

जब तक मंजिल प्राप्त न हो जाए।

वे केवल संत ही नहीं, एक महान देशभक्त व मानवप्रेमी थे। स्वामी जी ने जीवन के चरम लक्ष्य को केंद्रबिंदु माना, **''प्रत्येक जीव अव्यक्त बह्म है। बाह्य अंतःप्रकृति को वशीभूत करके अपने ब्रह्मा भाव को व्यक्त करना ही जीवन का चरम लक्ष्य है।''**

युग साक्षी है कि समाज का नेतृत्व सदैव पुरुष ने ही किया है। नवचेतना की यह पुकार है कि आने वाले समय में समाज की संपूर्ण बागडोर स्त्रियों के हाथ में होगी। ये भारत का दुर्भाग्य है कि आज भी आधे से ज्यादा जनसंख्या अशिक्षित है।

कहा भी जाता है कि एक लड़की की शिक्षा संपूर्ण परिवार की शिक्षा है। पिछले वर्षों में स्त्रियों के प्रति होने वाली घटनाओं से यह प्रतीत होता है कि समाज की दुर्दशा सुधरने के लिए स्त्री को शिक्षित बनाने में तनिक भी देर नहीं की जानी चाहिए।

स्वामी जी ने भी कहा कि जो देश, राष्ट्र स्त्रियों का आदर नहीं करते, वे कभी बड़े नहीं हो पाते हैं और न ही भविष्य में कभी बड़े होंगे। यथार्थ शक्ति पूजक तो वह है, जो जानता है कि ईश्वर विश्व में सर्वव्यापी शक्ति है और जो स्त्रियों में उस शक्ति का प्रकाश देखता है।

वर्तमान समय में नारी की स्थिति से वे पूर्णतया संतुष्ट नहीं थे। उनका मानना था कि उन्हें ऐसी स्थिति में पहुँचा देना चाहिए जहाँ वे अपनी समस्या को अपने ढंग से स्वयं सुलझा सकें। वे मानते थे कि स्त्री जाति की समस्याओं का हल शिक्षा द्वारा संभव है। वे मानते थे कि शिक्षा द्वारा आज की विभिन्न समस्याओंऋ जैसे- दहेज प्रथा, बाल विवाह, विध्वा विवाह, जनसंख्या वृ(आदि को सुलझाया जा सकता है। वे केवल किताबी शिक्षा को पूर्ण शिक्षा नहीं मानते थे।

स्वामी जी का मानना था- भारत को आवश्यकता है कि यहा पर संघमित्रा, लीला, अहिल्याबाई और मीराबाई जैसी निर्भीक नारियाँ तैयार हों जो वीरों की माताएँ होने के योग्य हों।

आदर्शों के स्तर पर विवेकानंद भारतीय स्त्री व पाश्चात्य स्त्री में भिन्नता का भाव रखते हैं। भारतीय संदर्भ में स्त्री गृह स्वामिनी और शासिका माता के रूप में है किंतु पाश्चात्य संदर्भ में गृह स्वामिनी और शासिका पत्नी के रूप में है। वे माता को जीवन, मृत्यु, अहंकार, आत्म-समर्पण सभी रूपों में प्रथम स्थान देते हैं।

पुस्तकीय ज्ञान और स्मृति प्रशिक्षण पर वे हमेशा हँसते थे। वे जीवन निर्माण, मानव निर्माण, चरित्रा निर्माण तथा विचारों का आत्म-सात्करण करने वाली शिक्षा पर बल देते थे। वे स्त्रियों को निर्भीक बनाने पर हमेशा जोर देते थे। उनका कहना था, **''निर्भीक बनो, तथ्यों का सामना तथ्यों की भाँति करो, अशुभ के भय से विश्व में इधर-उधर न भागो, अशुभ अशुभ है।''** वे पुत्रा और पुत्री की शिक्षा को समान रूप से महत्व देते थे।

28 दिसंबर 1893 को एक बंगाली शिष्या को लिखे अपने एक पत्रा में उन्होंने पिफर उसी विषय पर चर्चा की कि पुत्रियों का पालन-पोषण और शिक्षा भी उतनी ही सावधनी से की जानी चाहिए जैसे पुत्रों की।

एक व्याख्यान में उन्होंने कहा था, **''पहले अपनी स्त्रियों को शिक्षित करो, पिफर उन्हें उनके हाल पर छोड़ दो तब वे आपको बताएँगी कि उनके लिए कौन-कौन-से सुधर आवश्यक हैं। उनके मामले में तुम बोलने वाले कौन होते हो''?**

वे शिक्षा द्वारा स्त्री को स्वतंत्रा निर्णय लेने की क्षमता के विकास के पक्षधर थे। जिस प्रकार पुरुष शिक्षा द्वारा अपने पैरों पर खड़ा होकर स्वयं निर्णय लेता है। वही काम शिक्षा को स्त्रियों के लिए करना चाहिए।

Copyright © 2012 Published by IJAER. All rights reserved.

स्त्राी शिक्षा पर बल देते हुए 27 जनवरी 1900 को कैलीपफोर्निया में एक विशिष्ट श्रोता के समक्ष कहा, **''कोई पुरुष स्त्राी को आदेश नहीं देगा। स्त्रियाँ अपने भाग्य का पफैसला स्वयं करेंगी।''** आगे उन्होंने कहा, **''स्त्रियों की दुर्दशा का कारण यही है कि स्त्रियों के भाग्य का निर्माण करने का काम पुरुषों ने ले लिया है।''**

वे मानते थे कि यदि स्त्राी को सही स्वतंत्राता के साथ शिक्षित किया जाए तो वह किसी भी कार्य को पूर्णता के साथ कर लेगी। यह शिक्षा धर्मिकता व आध्यात्मिकता से परिपूर्ण होनी चाहिए। उसे वे सभी अध्किार प्राप्त होने चाहिए जो एक पुरुष को संविधन द्वारा प्राप्त होते हैं।

संसार का कार्य उचित ढंग से करने के लिए यह आवश्यक है कि स्त्राी-पुरफष की समानता को ध्यान में रखकर योजनाओं का निर्माण किया जाना चाहिए जोकि वर्तमान में देखने को नहीं मिल रहा है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि योजनाएँ तो महिलाओं के लिए अवश्य बनती हैं किंतु उनके क्रियान्वयन में महिलाओं को आगे नहीं लाया जाता है।

स्त्राी पुरुष से कुछ गुण अलग पाए जाते हैं अर्थात् वह कलात्मकता के गुण से ओत-प्रोत है। जो पुरुष में बहुध नहीं पाया जाता है। इसलिए स्त्रियों को प्राथमिकता और माध्यमिक स्तर पर गृह सज्जा, कढ़ाई-बुनाई, कटाई-सिलाई आदि की शिक्षा देना अनिवार्य है।

स्त्रियों को राजनीति का हिस्सा मानते हुए स्वामी विवेकानंद ने कहा कि **''जीवन संग्राम में वीर बनो, कहो सबसे कहो कि तुम निर्भय हो, भय का त्याग करो, क्योंकि भय मृत्यु है, भय पाप है, भय अधेलोक है, भय अधर्मिकता है। भय का जीवन में कोई स्थान नहीं है।''**

उनका मानना था किसी भी समाज का उत्थान और पतन वहाँ की नारी स्थिति पर ही निर्भर करता है। एक सभा के दौरान उन्होंने कहा कि किसी भी राष्ट्र की प्रगति का सर्वोत्तम थर्मामीटर है वहाँ की महिलाओं के साथ होने वाले व्यवहार।

आज ऐसी स्त्रियाँ स्वपनव(हो गई हैं जिनका प्रभाव समाज पर पड़ा हो। पुरुषों से समानता के स्तर पर आज उन्हें केवल कुछ सुविधएँ व अध्किार दिए गए हैं। किंतु अब समय आ गया है जब कुछ महान परिवर्तन करनें में स्त्रियों को आगे निकलना होगा व मानवता का शास्त्रा रचना होगा ताकि वे संसार में अपनी रक्षा के लिए शु(ता को अचूक ढाल बनाकर प्रलोभन से उफपर उठकर और निर्भय होकर भारतीय संस्कृति के मूल आधरों पर अहिंसा तथा सत्य पर आधरित एक नई सामाजिक सरंचना का पोषण कर सकें।

आज ऐसी ही शिक्षा की आवश्यकता है जो नारी को समाज में पुरुषों के समान अध्किार व सम्मान दिलाकर नारी शक्ति को, भारतीय संस्कृति को देश-देशांतरों में उज्ज्वल करने में अपनी भूमिका का निर्वहन करने के योग्य बना सकें।

Copyright © 2012 Published by IJAER. All rights reserved.

संदर्भ-ग्रंथ सूची

स्वामी विवेकानंद : शिक्षायोग ध्न्तोली नागपुर, श्री रामकृष्ण मठ, एकादश संस्करण 1996

एस0 एन0 मजुमदारः विवेकानंद चरित्रा, ध्न्तोली नागपुर, श्री रामकृष्ण मठ, एकादश संस्करण 1996

एस0 एन0 मजुमदारः शिकागो वक्तृता, ध्न्तोली नागपुर, 19वाँ संस्करण, श्री रामकृष्ण मठ, 1996

एस0 एन0 मजुमदारः भारतीय व्याख्यान, ध्न्तोली नागपुर, श्री रामकृष्ण मठ अष्टम् संस्करण 1996

एस0 एन0 मजुमदारः पत्राावली, ध्न्तोली नागपुर, श्री रामकृष्ण मठ, अष्टम् संस्करण 1996

स्वामी बु(ानंदः विवेकानंद साहित्य तृतीय खंड मायावती पिथौरागढ़ हिमाचल, द्वितीय संस्करण 1972

स्वामी बु(ानंदः विवेकानंद साहित्य प्रथम खंड मायावती पिथौरागढ़ हिमाचल, द्वितीय संस्करण 1972

स्वामी विवेकानंद : प्रेमयोग, ध्न्तोली, नागपुर श्री रामकृष्ण मठ, एकादश संस्करण 1996

स्वामी विवेकानंद : ज्ञानयोग, ध्न्तोली, नागपुर श्री रामकृष्ण मठ, एकादश संस्करण 1996

स्वामी विवेकानंद : कर्मयोग, ध्न्तोली, नागपुर श्री रामकृष्ण मठ, एकादश संस्करण 1996

स्वामी विवेकानंद : राजयोग, ध्न्तोली, नागपुर श्री रामकृष्ण मठ एकादश संस्करण 1996

स्वामी विवेकानंद : भक्तियोग, ध्न्तोली, नागपुर श्री रामकृष्ण मठ, एकादश संस्करण 1996

IJAER

Copyright © 2012 Published by IJAER. All rights reserved.